स्मृति शेष

जय प्रकाश पाण्डेय विशेष

www.e-abhivyakti.com

प्रिय मित्रों,

वैसे तो इस संसार में प्रत्येक व्यक्ति एक विशिष्टता लेकर आता है और चुपचाप चला जाता है। फिर छोड़ जाता है वे स्मृतियाँ जो जीवन भर हमारे साथ चलती हैं। लगता है कि काश कुछ दिन और साथ चल सकता । किन्तु विधि का विधान तो है ही सबके लिए सामान, कोई कुछ पहले जायेगा कोई कुछ समय बाद। किन्तु, जय प्रकाश भाई आपसे यह उम्मीद नहीं थी कि इतने जल्दी साथ छोड़ देंगे। अभी कुछ ही दिन पूर्व नागपूर जाते समय आपसे लम्बी बात हुई थी जिसे मैं अब भी टेप की तरह रिवाइंड कर सुन सकता हूँ। और आज दुखद समाचार मिला कि आप हमें छोड़ कर चले गए। इस बीच न जाने कितने अपुष्ट समाचार मिलते रहे और हम सभी मित्र परमपिता परमेश्वर से प्रार्थना करते रहे कि कुछ चमत्कार हो जाये और हम सब को आपका पुनः साथ मिल जाए।

कहाँ गए वे लोग ?

इस वर्ष (२०२४) के प्रारम्भ से ही जय प्रकाश जी के मन में चल रहा था कि एक ऐतिहासिक साप्ताहिक स्तम्भ "कहाँ गए वे लोग?" प्रारम्भ किया जाये जिसमें *हम अपने आसपास की ऐसी महान हस्तियों की जानकारी प्रकाशित करें जो आज हमारे बीच नहीं हैं किन्तु, उन्होने देश के स्वतंत्रता संग्राम, साहित्यिक, सामाजिक या अन्य किसी क्षेत्र में अविस्मरणीय कार्य किया है।* और २८ फरवरी २०२४ को इस श्रृंखला की पहली कड़ी में पंडित भवानी प्रसाद तिवारी जी की स्मृति में एक आलेख प्रकाशित कर इस श्रृंखला को प्रारम्भ किया। भाई जय प्रकाश जी की रुग्णावस्था में इस कड़ी को भाई प्रतुल श्रीवास्तव जी ने सतत जारी रखा। **हमें यह कल्पना भी नहीं थी कि जिस श्रृंखला को उन्होने प्रारम्भ किया हमें उस श्रृंखला में उनकी स्मृतियों को भी जोड़ना पड़ेगा। इससे अधिक कष्टप्रद और दुखद क्षण हमारे लिए हो ही नहीं सकते।**

हम **भाई जय प्रकाश जी** और **श्री विवेक रंजन श्रीवास्तव जी** के साथ मिलकर सदैव नूतन और अभिनव प्रयोग की कल्पना कर उन्हें साकार करने का प्रयास करते रहते थे। इसके परिणाम स्वरूप हमने महात्मा गांधी जी के150वीं जयंती पर गांधी स्मृति विशेषांक, हरिशंकर परसाई जन्मशती विशेषांक, दीपावली विशेषांक जैसे विशेषांकों को प्रकाशित किया। **डॉ कुंदन सिंह परिहार जी** के 85 वे जन्मदिवस पर "**85 पर - साहित्य के कुंदन**" का प्रकाशन उनके ही मस्तिष्क की उपज थी। ऐसे कई अभिनव प्रयोग अभी भी अधूरे हैं और कई अभिनव प्रयोग उनके मन में थे जो उनके साथ ही चले गए।

व्यंग्यम और व्यंग्य पत्रिकाओं से उनका जुड़ाव

व्यंग्यम संस्था तो जैसे उनके श्वास के साथ ही जुड़ी थी। ऐसी कोई चर्चा नहीं होती थी जिसमें व्यंग्यम, अट्टहास और अन्य साहित्यिक पत्रिकाओं की चर्चा न होती हो। व्यंग्यम के वरिष्ठ सदस्यों और व्यंग्यकार मित्रो के दुख का सहभागी हूँ।

व्यंग्य लोक द्वारा - "व्यंग्य लोक स्व. जयप्रकाश पाण्डेय स्मृति व्यंग्य सम्मान" की घोषणा

श्री रामस्वरूप दीक्षित जी द्वारा प्राप्त सूचनानुसार व्यंग्य लोक द्वारा - ***"व्यंग्य लोक स्व. जयप्रकाश पाण्डेय स्मृति व्यंग्य सम्मान"*** की घोषणा की गई है। इस सम्मान में रु 5000 राशि प्रदान करने की घोषणा की गई है। साथ ही पहला सम्मान स्व. जयप्रकाश जी के गृहनगर जबलपुर में प्रदान किया जाएगा। यह एक प्रशंसनीय कदम है।

*डॉ कुन्दन सिंह परिहार जी के अनुसार उन्होने सोशल मीडिया में 700 से अधिक मित्रों द्वारा अर्पित श्रद्धांजलियां और शोक संदेश देखे हैं जो उनके सौम्य व्यवहार और लोकप्रियता के प्रतीक हैं। व्यंग्यम, अट्टहास, व्यंग्य लोक और अन्य पत्रिकाओं से जुड़े सभी वरिष्ठ साहित्यकारों और व्यंग्यकार मित्रो ने मेरे अनुरोध को स्वीकार कर इस विशेष अंक में भाई जय प्रकाश जी से जुड़ी हुई अपनी स्मृतियाँ और संक्षिप्त विचार **श्री विवेक रंजन श्रीवास्तव जी, श्री प्रतुल श्रीवास्तव जी** और **श्री रमाकांत ताम्रकार जी** के माध्यम से प्रेषित किए।*

इस प्रयास में हम आपके संस्मरणों/विचारों को श्रद्धासुमन स्वरूप भाई जय प्रकाश जी को समर्पित करते है।

बस इतना ही।

हेमन्त बावनक, पुणे

वर्तमान में बेंगलुरु से

अनुक्रमणिका

एक हरदिल-अज़ीज़ इंसान का विदा होना - डॉ. कुन्दन सिंह परिहार 4
एक अच्छे व्यंग्यकार ही नहीं, वरन बेहतर मनुष्य भी थे - श्री गिरीश पंकज 5
जय प्रकाश पाण्डेय: मेरे भाई, सहकर्मी, और साहित्यिक - श्री जगत सिंह बिष्ट 6
जयप्रकाश पांडेय जी का यूँ चले जाना - डॉ. सुरेश कुमार मिश्रा 'उरतृप्त' 8
समर्पित व्यंग्यकार पाण्डेय जी - श्री सुरेश मिश्रा "विचित्र" 10
याद आओगे जयप्रकाश - श्री विवेक रंजन श्रीवास्तव 11
जय प्रकाश : दिखने में आम, फिर भी खास - श्री अभिमन्यु जैन 12
जयप्रकाश पांडेय जी हमेशा जेहन में बने रहेंगे - श्री सुदर्शन कुमार सोनी 13
जयप्रकाश पांडे का आकस्मिक निधन हिंदी व्यंग्य को एक अपूरणीय क्षति - श्री रामकिशोर उपाध्याय . 14
सरल हृदय के तीखे कलमकार थे जयप्रकाश पांडे - श्री प्रतुल श्रीवास्तव 16
कहाँ हैं जय प्रकाश? - डॉ सत्येंद्र सिंह 18
सहज सरल जिंदादिल व्यक्तित्व के धनी - डॉ. प्रदीप शशांक 20
व्यंग्य लेखन में परसाई की परंपरा को आगे बढ़ाया - श्री राजशेखर चौबे 23
साहित्य के सूर्य - जय प्रकाश पांडे जी - श्री रमाकांत ताम्रकार 24
मार्गदर्शक स्वर्गीय जयप्रकाश पांडे जी - श्री श्याम खापर्डे 26
जयप्रकाश पांडेय जी की स्मृति में... - श्री राकेश कुमार 29
"व्यंग्य लोक स्व. जयप्रकाश पाण्डेय स्मृति व्यंग्य सम्मान" की घोषणा - श्री रामस्वरूप दीक्षित 31
अविस्मरणीय संस्मरण - साभार - स्मृतिशेष जयप्रकाश जी के स्वजन-मित्रगण 32
मन बहुत व्यथित हुआ - श्री सुनील जैन राही 32
प्रिय जय प्रकाश तुम बहुत याद आओगे - श्री जयंत भारद्वाज 32
व्यंग्य लेखन में परसाई की परंपरा को आगे बढ़ाया - डॉ ए के तिवारी 33
अंत समय तक रचनाधर्मिता में लगे रहे - श्री मुकेश गर्ग असीमित 33
विनम्र श्रद्धांजलि - श्री ओ.पी.सैनी 34
संस्मरण (35-40 वर्ष) पूर्व का... - श्री के. पी. पाण्डेय 'वृहद' 34

एक हरदिल-अज़ीज़ इंसान का विदा होना - डॉ. कुन्दन सिंह परिहार

भाई जयप्रकाश पांडेय अचानक ही, असमय, संसार से विदा हो गये। अल्पकाल में ही बीमारी ने उनका जीवन-दीप बुझा दिया, और हम सब उनके मित्र ठगे से देखते रह गये। उनके परिवार के लिए यह अकल्पनीय आघात है। प्रकृति ऐसे ही बेलिहाज हमें जीवन की अनिश्चितता और क्षणभंगुरता का आभास कराती है।

जयप्रकाश जी से संबंध 40-45 वर्ष पुराने हुए। कभी वे एक लेखक संगठन के स्थानीय सचिव और मैं उसका स्थानीय अध्यक्ष हुआ करते थे। तब कई बार विपरीत स्थितियों के विरुद्ध खड़े होने की उनकी दृढ़ता और संगठन-क्षमता का मुझे भान हुआ। वे बड़ी-बड़ी समस्याओं को शान्ति से निपटा देते थे, लेकिन यथासंभव वे लोगों से अपने पुराने संबंधों को बिगड़ने नहीं देते थे। उनके मित्रों की संख्या विशाल थी क्योंकि उनकी नज़र मित्रों की कमियों, कमज़ोरियों पर कम जाती थी। अभी उनके देहान्त के बाद फेसबुक पर मैंने उनके लिए लगभग 700 लोगों की श्रद्धांजलियां देखीं।

मैंने पाया कि पांडेय जी बड़े स्वाभिमानी थे। व्यर्थ में किसी के सामने झुकना उन्हें पसन्द नहीं था। अपने सम्मान के प्रति वे सचेत रहते थे। वे वैज्ञानिक सोच वाले थे। अंधविश्वासों, ढकोसलों के फेर में नहीं पड़ते थे।

जयप्रकाश जी सहज ही मित्रों का उपकार करते थे। मैं लगातार अपनी जन्मतिथि को छिपाता रहा क्योंकि मैं आत्मप्रचार को पसन्द नहीं करता, लेकिन पचासी पर पहुंचने पर उन्होंने मुझे पकड़ लिया और अपने निवास पर आयोजन कर डाला। उन्होंने मेरे ऊपर एक 80-85 पेज की टाइप्ड पुस्तिका निकाल दी जिसमें कई लोगों से लेख मंगवाकर शामिल किये। ऐसे ही मेरे एक व्यंग्य- संग्रह का विमोचन अपने निवास पर कर डाला। पत्रिकाओं में मुझसे पूछे बिना ही वे मेरी रचनाएं भेज देते थे। लोकप्रिय पत्रिका 'अट्टहास' के अक्टूबर 24 के अंक के अतिथि संपादक के रूप में उन्होंने जबलपुर के कई व्यंग्यकारों की रचनाएं छापीं। उसमें मेरी एक रचना मुझसे मांगे बिना ही भेज दी। बाद में दिसंबर अंक के लिए भी मेरी एक रचना भेज दी।

जबलपुर में 'व्यंग्यम' समूह की अधिकतर बैठकें उन्हीं के निवास पर हुईं जहां वे उपस्थित लेखकों की पूरी खातिरदारी करते थे। बीमारी के दौर में भी उनकी इच्छा पर यह सिलसिला चलता रहा। बीमारी को पराजित करने की उन्होंने पूरी कोशिश की, लेकिन अंततः बीमारी उन पर हावी हो गयी और हमने अपने बहुत प्यारे मित्र और समाज ने एक बहुत मूल्यवान व्यक्ति को खो दिया।

पांडेय जी के द्वारा छोड़े गये शून्य के मद्देनज़र मुझे **शायर निदा फ़ाज़ली** का शेर याद आता है---

'उसको रुख़सत तो किया था, मुझे मालूम न था,

सारा घर ले गया घर छोड़ के जाने वाला।'

डॉ. कुंदन सिंह परिहार, 59, नव आदर्श कॉलोनी, गढ़ा रोड, जबलपुर-2 मो.-9926660392, 7999694788

एक अच्छे व्यंग्यकार ही नहीं, वरन बेहतर मनुष्य भी थे - श्री गिरीश पंकज

जयप्रकाश पांडेय जी के रूप में एक बेहतर मनुष्य हमारे बीच से चले गए. ये सिर्फ एक एक अच्छे व्यंग्यकार ही नहीं थे वरन बेहतर मनुष्य भी थे. पिछले साल जब मैं पाँच हजार रुपये राशि वाले एक सम्मान के लिए जबलपुर गया था, तो कार्यक्रम के समय से लगातार मेरे साथ रहे. रात को एक जगह ले जाकर मुझे डिनर भी कराया. एक घटना बताने में मुझे कोई संकोच नहीं कि जिस सम्मान के लिए मैं गया, उसके पहले एक ने मुझसे दो-तीन पुस्तकें बुलवाई कि पढ़ना चाहता हूँ. मैंने भेज दी. फिर किसी का फोन आया कि आपको हम एक सम्मान देंगे. लेकिन आपको ₹200 शुल्क देना होगा. मैंने साफ -साफ इनकार कर दिया कि मैं कोई शुल्क नहीं दूंगा. तो पांडेय जी का फोन आया. उन्होंने कहा कि आपको कोई शुल्क नहीं देना है. आयोजकों ने ऐसा नियम ही बना रखा है कि क्या करें. लेकिन आपको आना है. आपका शुल्क मैंने पटा दिया है. आप आ जाएं इसी बहाने आपके साथ कुछ घंटे बिताने का अवसर मिलेगा. उनके स्नेहभरे आग्रह के कारण मैं जबलपुर गया और लंबे समय तक पांडेय जी के साथ समय बिताया. जब वे अट्टहास पत्रिका का अतिथि संपादन कर रहे थे, तब भी उनसे दो बार बात हुई. और उनके सम्पादन में अट्टहास का सबसे खूबसूरत विशेषांक निकला. उसका कलेवर अभूतपूर्व था. उनका जाना व्यंग्य साहित्य की बड़ी क्षति है. उनको शत-शत नमन!

- श्री गिरीश पंकज

जय प्रकाश पाण्डेय: मेरे भाई, सहकर्मी, और साहित्यिक - श्री जगत सिंह बिष्ट

जय प्रकाश पांडेय अंततः चले ही गए। अचानक नहीं गए, धीरे-धीरे जाते रहे। प्रतिदिन अपडेट मिलते थे। वे काफी समय से अस्वस्थ चल रहे थे और उनके हालचाल ठीक नहीं थे। पूछने पर गोलमोल उत्तर देते रहे। कल जब वो चले गए तो सब कुछ शून्य-सा हो गया। काफी देर तक कुछ सूझ ही नहीं रहा था। बस एक शांतता। एक वैराग्य भाव।

इसी वर्ष, मार्च-अप्रैल में, मैं उत्तराखंड भ्रमण के लिए गया हुआ था। उस दिन मैं मुनस्यारी से रानीखेत की ओर जा रहा था। रास्ते में, जयप्रकाश का फोन आया, "आप कहां हैं इस समय? वहां से जिम कार्बेट नेशनल पार्क कितनी दूर है? वहां मेरे एक अच्छे मित्र हैं, बहुत अच्छे इंसान हैं, आप ही की तरह। वो भी बिष्ट ही हैं। आपके कॉर्बेट भ्रमण की बढ़िया व्यवस्था कर देंगे। मैं उनसे कहता हूं। "

उनके सौजन्य से अति उत्तम व्यवस्था भी हो गई। लौटे, तो उन्होंने पूछा कि लगभग कितना खर्च आता है वहां का। इस वर्ष, वहां जाने का उनका मन था!

मेरा उनसे परिचय लगभग पचास वर्ष पुराना है। वर्ष 1975 से। तब मैं जबलपुर विश्वविद्यालय के रसायन-शास्त्र विभाग में स्नातकोत्तर कक्षा के फाइनल ईयर में पढ़ रहा था। वो प्रीवियस ईयर में आए। कालांतर में, वे मित्र से ज्यादा भाई की तरह हो गए। उनमें आत्मीयता बहुत थी।

संयोगवश, हम दोनों ने भारतीय स्टेट बैंक ज्वॉइन किया। अनेक बार सहकर्मी बनकर साथ-साथ काम करने का अवसर मिला।

वर्ष 1990-91 के आसपास की बात है। कादम्बिनी पत्रिका ने अखिल भारतीय व्यंग्य कथा प्रतियोगिता का आयोजन किया जिसमें मेरी एक रचना पुरस्कृत हुई। जयप्रकाश मुझसे पत्रिका से प्राप्त पत्र मांगकर ले गए। एक प्रेस विज्ञप्ति बनाई और दैनिक भास्कर में स्वयं पहुंचाकर आए। इस प्रसंग का उल्लेख इसलिए कर रहा हूं ताकि पाठक समझ सकें कि आयोजनधर्मी जयप्रकाश जी की कार्यशैली किस प्रकार थी।

परसाई जी के जन्मदिन के अवसर पर, लगभग उन्हीं दिनों, उन्होंने एक भव्य आयोजन लगभग अपने ही दम पर सफलतापूर्वक आयोजित किया था। इस प्रसंग की चर्चा खुद परसाई जी ने भी अपने एक लेख में की है। उन्होंने मना किया था, पर जयप्रकाश कहां मानने वाले थे!

मेरे पहले व्यंग्य-संग्रह की भूमिका हेतु वे ही मुझे डॉ कुंदन सिंह परिहार के पास ले गए थे। 'पहल' के आयोजन के अंतर्गत, मेरी पहली पुस्तक का ज्ञानरंजन जी के द्वारा विमोचन का श्रेय भी भाई राजेंद्र दानी और उनको जाता है।

जयप्रकाश जी दूसरों के लिए आयोजन करने में काफी समय और ऊर्जा खर्च करते रहे। समझाने पर भी उन्होंने अपने लेखन की ओर गंभीरता से कोई तवज्जो कभी नहीं दी। अब उनके लेखन का मूल्यांकन तो आलोचक ही करेंगे, मेरी क्या बिसात? लेकिन मैं इतना अवश्य कहूंगा कि उनमें जितनी गहरी संवेदना और परख थी, उसके मद्देनजर उनके समक्ष असीम संभावनाएं थीं। उन्होंने कितना लिखा, कितना न्याय किया, यह तो केवल उन्हीं को मालूम होगा। भोले बनकर, मंद-मंद मुस्कुराते हुए, अपने मन की करते जाना ही उनकी प्रवृत्ति थी, यही उनकी प्रकृति थी।

वे हमसे दूर चले गये हैं जहां न कोई दर्द है, न कोई पीड़ा। कोई बंधन नहीं, वहां पूर्ण स्वतंत्रता है। वहां भी उन्होंने अब तक कोई बड़े आयोजन की तैयारी शुरू कर ही दी होगी, ऐसा मुझे पूर्ण विश्वास है!

उन्हें हृदय से मेरी अश्रुपूरित, विनम्र श्रद्धांजलि। ॐ शांति, शांति, शांति!

श्री जगत सिंह बिष्ट

(Master Teacher: Happiness & Well-Being, Laughter Yoga Master Trainer, Author, Blogger, Educator, and Speaker.)

जयप्रकाश पांडेय जी का यूँ चले जाना - डॉ. सुरेश कुमार मिश्रा 'उरतृप्त'

मैं जब तक अपने ये विचार फेसबुक पर पोस्ट कर रहा हूँगा तब तक जयप्रकाश पांडेय जी का पार्थिव शरीर चिता की लपटों में राख बन गया होगा...

जाने क्यूँ इक ख़याल सा आया

मैं न हूँगा तो क्या कमी होगी

ख़लील-उर-रहमान आज़मी की इन पंक्तियों ने मुझे झकझोरकर रख दिया। रह-रहकर मुझे जयप्रकाश पांडेय जी की याद सताने लगी। उनके पार्थिव शरीर के जलने की कल्पना मुझे व्यथित कर रही है। जी हाँ, मुझे जयप्रकाश पांडेय जी की कमी बड़ी खल रही है।

"व्यंग्य की नगरी का एक दीप बुझ गया

वह हँसता-मुस्कुराता चेहरा न जाने कहाँ गया

परसाई की नगरी जबलपुरवासी जय प्रकाश पांडेय जी का स्वर्गवास समकालीन हिंदी व्यंग्य साहित्य के लिए वह अपूरणीय क्षति है, जिसे शब्दों में व्यक्त करना मुश्किल है। ऐसा लगता है मानो व्यंग्य आंगन का दुलारा हमें छोड़कर चला गया है। उनकी लेखनी की धार, उनके शब्दों का जादू और उनकी सादगी भरी शख्सियत ने न जाने कितने साहित्य प्रेमियों के दिलों को छुआ।

हरिशंकर परसाई जी जैसे महान साहित्यकार की रचनाओं में जय प्रकाश पांडेय जी का नाम उल्लिखित होना, उनके लिए किसी सौभाग्य से कम नहीं था। लेकिन पांडेय जी ने इस सौभाग्य को केवल स्वीकारा ही नहीं, बल्कि इसे अपनी जिम्मेदारी समझकर समकालीन हिंदी व्यंग्य साहित्य में अपनी महत्वपूर्म उपस्थिति दर्ज कराई।

इसी वर्ष 10 अप्रैल को जब हरिशंकर परसाई जी का मकान ढहा दिया गया, तो उस घटना ने व्यंग्य साहित्य प्रेमियों के दिलों को झकझोर कर रख दिया। पांडेय जी इस पीड़ा को अपनी पीड़ा मानते हुए सोशल मीडिया पर इस घटना को प्रमुखता से उठाने का महत्वपूर्ण कार्य किया। उनका कहना था कि परसाई का

नाम लेने मात्र से कुछ नहीं होता, उन्हें जीने की कोशिश करना असली परसाइयत है। इसी कड़ी में मध्य प्रदेश के द क्लिफ न्यूज अंग्रेजी अखबार ने इस खबर को प्रमुखता से प्रकाशित किया। राज्य सरकार का संस्कृति विभाग निरुत्तर हो गया, लेकिन पांडेय जी के प्रयासों ने यह साबित कर दिया कि साहित्यकार केवल लेखनी से ही नहीं, अपने कर्मों से भी समाज को दिशा देते हैं।

जय प्रकाश पांडेय जी ने देशभर के बड़े साहित्यकारों को इस मुहिम में जोड़ा। आदरणीय प्रेम जनमेजय जी, विष्णु खरे जी, ज्ञानरंजन जी, रमेश सैनी जी, सुभाष चंदर जी, रमेश तिवारी जी, कुंदन परिहार जी और स्वयं पांडेय जी ने इस घटना की कड़ी भर्त्सना की। यहां तक कि जापान से पद्मश्री तोमियो मिजोकामी जी भी इस आंदोलन का हिस्सा बने। यह उनकी दूरदृष्टि और अथक प्रयासों का परिणाम था कि परसाई जी की स्मृति रूपी धरोहर को बचाने की मुहिम ने राष्ट्रीय और अंतरराष्ट्रीय स्तर पर पहचान बनाई।

जय प्रकाश पांडेय जी केवल व्यंग्यकार नहीं थे, बल्कि व्यंग्य की धरोहर को बचाने वाले सच्चे सिपाही भी थे। उनकी लेखनी में समाज के हर पहलू को सजीव रूप में प्रस्तुत करने की कला थी। वे विसंगतियों के माध्यम से समाज की गहराईयों को छूने में सक्षम थे। उनके शब्द न केवल चोट करते थे, बल्कि सोचने पर मजबूर भी कर देते थे।

जय प्रकाश पांडेय जी का व्यक्तित्व बेहद सरल, मिलनसार और प्रभावशाली था। उनकी आवाज में अपनापन और उनके विचारों में गहराई थी। वे मुझसे घंटों फोन पर बात करते और कहते, “उरतृप्त जी, आपकी लेखनी का मैं बड़ा प्रशंसक हूं। ” उनकी प्रशंसा न केवल प्रेरणा देती थीं, बल्कि आगे बढ़ने का हौसला भी।

उनसे मेरी दो बार भेंट हुई थी। पहली बार दिल्ली में व्यंग्ययात्रा सम्मान के दौरान और दूसरी बार रायपुर में महेंद्रसिंह ठाकुर द्वारा आयोजित सम्मान कार्यक्रम में। हर बार उनकी सादगी और बौद्धिक गहराई ने मन को छू लिया। उनका स्नेह और उनका मार्गदर्शन हमेशा याद रहेगा।

आज जब वे हमारे बीच नहीं हैं, तो ऐसा लगता है मानो हिंदी व्यंग्य लोक का एक सितारा टूट गया हो। उनका जाना व्यंग्य प्रेमियों के लिए किसी असहनीय पीड़ा से कम नहीं है। उनकी हंसी, उनका व्यंग्य, और उनकी लेखनी हमें हमेशा उनकी याद दिलाती रहेगी।

"अलविदा कह गए, दिल को तोड़ गए,

साहित्य के आंगन में हमें अकेला छोड़ गए।"

जय प्रकाश पांडेय जी के योगदान को शब्दों में समेटना असंभव है। उनका नाम हिंदी व्यंग्य में हमेशा याद किया जाएगा। उनके विचार, उनकी लेखनी और उनकी यादें हमें सदैव प्रेरित करती रहेंगी।

"अब रह गई बस यादें, और अश्रुधारा,

पांडेय जी, आप थे हमारी आँखों का तारा।"

उनकी आत्मा को शांति मिले और हम सभी को उनकी लेखनी और विचारों से प्रेरणा लेकर उनके अधूरे सपनों को पूरा करने का साहस मिले। जय प्रकाश पांडेय जी, आप हमेशा हमारे दिलों में जिंदा रहेंगे।

अंत में अहमद आमेठवी के शब्दों में -

ज़िंदगी है अपने क़ब्ज़े में न अपने बस में मौत

आदमी मजबूर है और किस क़दर मजबूर है

डॉ. सुरेश कुमार मिश्रा 'उरतृप्त'

हैदराबाद

समर्पित व्यंग्यकार पाण्डेय जी - श्री सुरेश मिश्रा "विचित्र"

जयप्रकाश पांडे जी भले ही हमारे बीच में नहीं है, लेकिन उन्होंने शहर के व्यंग्यकारो को एकत्र करते हुए व्यंगम संस्था का अच्छा खासा संचालन किया। और प्रत्येक माह होने वाली व्यंग्य गोष्ठी को अपने ही निवास पर आयोजित करते रहे, यह एक बड़ी उपलब्धि रही है।जिसने व्यंग्य लेखन में शहर को आगे रखा है। आपका व्यंग्य लेखन और व्यंग्य की बारीकियों को, विसंगतियों को,उजागर कर अपने लेखन मे पैनापन बनायें रखा। व्यंग्य लेखन के लिए उनके द्वारा किया गया यह समर्पित भाव एवं कार्य हमेशा याद रखा जाएगा।

सादर श्रृद्धासुमन अर्पित है 🙏🌹🙏

- श्री सुरेश मिश्रा "विचित्र"

याद आओगे जयप्रकाश - श्री विवेक रंजन श्रीवास्तव

डांस इंडिया डांस के व्यंग्यकार पांडे जी का जाना मेरे लिए व्यक्तिगत क्षति है। इस कृति के प्रकाशन हेतु मैने ही उन्हें प्रकाशक से मिलवाया था। पुस्तक मेले से पहले भागम भाग आपाधापी में किताब छपी थी। ई अभिव्यक्ति सहित कई संपादन हमने साथ किए। पाठक मंच में उन्होंने मेरे साथ सह आयोजक की भूमिका निभाई, हम प्रायः फोन संपर्क में रहे।

जब वे नारायण गंज, मंडला में पदस्थ थे, वे चुटका परमाणु संयंत्र के संदर्भ में जन जागरण अभियान से जुड़े रहे, चूंकि इस परियोजना का सर्वे से लेकर प्रोजेक्ट रिपोर्ट तक के सारे प्रारंभिक कार्य मैं ही कर रहा था, हम संपर्क में आए थे।

व्यंग्यधारा के संचालन हेतु भी हम दोनों ने ही श्री रमेश सैनी जी का नाम सुझाया था। कुछ कार्यकम उनके साथ आयोजित किए। कई गोष्ठियों में साथ साथ सहभागिता रही।

जब मैने अट्टहास का विमोचन जबलपुर में इंस्टिट्यूशन आफ इंजीनियर्स में करवाया था तब एवं 'मिली भगत' के विमोचन अवसर पर उनका पूरा सहयोग मिला। उनके घर पर व्यंग्यम की कई गोष्ठियों में मैने व्यंग्य पढ़े हैं। उनकी पुस्तक की समीक्षा भी की।

मेरी किताब 'खटर पटर' के लिए उनके सुंदर हस्त लेख में लिखा पत्र मेरे पास सुरक्षित है।

वे बातचीत में उनकी कैंसर की बीमारी के ठीक होने के प्रति पूर्ण आश्वस्त लगते थे, उन्होंने मेरे टाटा मेमोरियल जाने के सुझाव को पहले विचार में ही नकार दिया था।

परमात्मा को शायद उनकी वहां ज्यादा जरूरत थी।

विनम्र श्रद्धा सुमन ही अर्पित कर सकते हैं। याद आओगे जयप्रकाश।

विवेक रंजन श्रीवास्तव, संपर्क - ए 233, ओल्ड मिनाल रेजीडेंसी भोपाल 462023

मोब 7000375798, ईमेल apniabhivyakti@gmail.com

जय प्रकाश : दिखने में आम, फिर भी खास - श्री अभिमन्यु जैन

मित्रों, जय प्रकाश विगत 40 वर्षों से भी अधिक समय से लेखन में रत हैं. जयपुर से प्रकाशित नई गुदगुदी में अपने लेख के साथ उनके लेख भी देखते मिलते रहे. सेवा निवृति पश्चात जबलपुर में निवास हुआ. पिछले 8 वर्षों से उनके सतत संपर्क में रहा. व्यंग्यम की स्थापना, बिना किसी पदाधिकारी के निर्वाचन या मनोनयन के हुई. कई आयोजन भी हुए. जय प्रकाश जी का लेखन कालजयी था. उन्होंने खूब लिखा, खूब नाम और यश कमाया. आकाशवाणी के अनेक केंद्रों से कहानी और व्यंग्य का दीर्घ कल तक प्रसारण, कई पत्र -पत्रिकाओं में कविता, कहानी, व्यंग्य का प्रकाशन, अनेक पत्रिकाओं में अतिथि सम्पादक की भूमिका भी निभाई. कबीर सम्मान, अभिव्यक्ति सम्मान, कादम्बिनी अखिल भारतीय व्यंग्य लेखन प्रतियोगिता में, एवं रविंद्र भवन भोपाल में नाट्य विधा में पुरस्कार प्राप्त.. बहुत लम्बी फेहरिस्त है. वे पुरस्कार का नहीं, पुरस्कार उनका पीछा करते रहे. पांडे जी ने जी भर के लिखा, और छपे भी जी भर के. उनका लेखन किसी भी रावण की लंका जलाने में स क्ष म है. कई जगह शब्दों का तुलनात्मक प्रयोग करके व्यंग्य को सहज और सरल बनाया. यह उनके लेखन की ताकत है. रचनाओं में फ़िल्मी गीतों का बहुत अच्छा प्रयोग किया है. कहीं कहीं तो ऐसा हुआ की सवाल और जवाब भी इन्हीं गीतों के माध्यम से हुआ. लेखन से सत्ता को जितना नंगा किया जा सकता था उन्होंने किया. उन लेखकों को आईना दिखाया है जो सत्ता का प्रवक्ता बनने के लिए अपने आपको किसी भी कीमत पर सर के बल खड़े होने की कोशिश कर रहे हैं. खूब लिखने, प्रकाशन होने के बावजूद भी उनकी एक मात्र कृति डांस इंडिया डांस ही प्रकाशित हुई. इसकी प्रति समीक्षार्थ भेंट की जिस पर मैंने समीक्षा लिखी. प्रकाशित भी हुई.

जय प्रकाशजी जिंदादिल इंसान, सहयोग को तत्पर, झूठ, फरेब उन्हें पसंद नहीं. वे पारदर्शिता को बहुत महत्त्व देते थे. और इसी व्यवहार की अपेक्षा वे दूसरों से करते थे. इसका सबसे बड़ा उदाहरण है उनकी कैंसर की बीमारी. मैंने कई घरों में देखा है परिवार के किसी सदस्य के कैंसरग्रस्त हों जाने से पूरा परिवार ताकत लगाता है कि इस बीमारी की भनक बाहर किसी को न लगे किन्तु जय प्रकाश का कलेजा देखो कि उन्होंने डंके कि चोट अनेक ग्रुप में इस बीमारी से पीड़ित होने का खुलासा कर दिया. इस बीमारी कि जानकारी के बाद भी अपने घर पर व्यंग्यम कि मासिक गोष्ठी आयोजित की. ज़ब मिले हँसते, मुस्कराते रहे. पीड़ा को पीते रहे. वे अपनी पीड़ा से दूसरे को पीड़ित नहीं करना चाहते थे. दूसरों के मान सम्मान का

बहुत ध्यान रखते थे. बार बार उनके निधन के समाचार अनेक ग्रुप में चल जाते, बाद में ज्ञात होता कि, सही नहीं है. तब अचानक से ऐसा लगता कि शायद कोई ईश्वरी चमत्कार होना है जो जय प्रकाश जो को स्वस्थ कर देगा, ऐसा हुआ नहीं.

वो रूठा इस अदा से कि मौसम बदल गया.

इक शख्श सारे शहर को वीरान कर गया.

श्री अभिमन्यु जैन, ***मोबाइल***. 9425885294

जयप्रकाश पांडेय जी हमेशा जेहन में बने रहेंगे - श्री सुदर्शन कुमार सोनी

जयप्रकाश जी का अचानक चले जाना अंत्यंद दुखद है। उनके साथ का एक प्रसंग याद आ रहा है। वो व मैं मध्यप्रदेश के उमरिया जिले में पदस्थ थे। बात होगी 2011-12 की मुझे तब पता नही था कि वो व्यंग्य भी लिखते हैं। मैं वहां मुख्य कार्यपालन अधिकारी, जिला पंचायत के तौर पर पदस्थ था और वे बैंक में। सेन्टल बैंक आफ इंडिया उमरिया का लीड बैंक था अतः वे आरसेटी रूरल सेल्फ एम्पलायमेंट टेनिंग इस्टटीटयूट का भी कुछ कार्य देखा करते थे। जंहा मैंने कई बैचेस में युवक युवतियों की रोजगारमूलक प्रशिक्षण कार्यक्रम करवाए थे। वहां पर मेरे बंगले में एक नाई गंगू मालिश के लिए आया करता था। वह बहुत बातूनी था लेकिन बडी़ अच्छी अच्छी बातें किया करता था। मैंने उस पर गंगू के नाम से एक कहानी भी लिखी थी। उसका किरदार मुझे बडा़ रोचक लगा तो मैंने अपने व्यंग्य का उसे किरदार बना लिया पुराने कई दर्जन व्यंग्यों में उसका नाम आता है। गंगू जयप्रकाश जी के भी सम्पर्क में था यह मुझे ज्ञात नही था। वहां से आने के बाद संभवतया मुझे पता चला कि उन्होने भी गंगू को अपनी रचनाओं में एक किरदार के रूप में प्रयोग करना शुरू कर दिया है। मैं यह जान बडे पशोपेश में पड़ गया। मैं उनसे कैसे कह सकता था कि आप यह प्रयोग करना बंद कर दो या वो मुझसे कहते कि आप यह प्रयोग बंद कर दो। काफी बाद में मेरे एक मित्र ने मेरे कुछ व्यंग्य पढ़ते हुए कहा कि आप यह किरदार बदल कर अच्छा सा नाम रखों। मुझे उसकी बात जांच गई और अब गंगू मेरी रचनाओं में गंगाधर है। एक बार मैं उनकी वैगन आर में जबलपुर से उमरिया व्हाया सड़क मार्ग आया भी था। जयप्रकाश जी को बहुत बहुत श्रद्वासुमन वे हमेशा जेहन में बने रहेंगे। जंहा तक मुझे याद है वे हमारी संस्था भोजपाल साहित्य संस्थान के आजीवन सदस्य भी हैं।

- श्री सुदर्शन कुमार सोनी

जयप्रकाश पांडे का आकस्मिक निधन हिंदी व्यंग्य को एक अपूरणीय क्षति - श्री रामकिशोर उपाध्याय

प्रख्यात व्यंग्यकार जयप्रकाश पांडे जी के निधन की खबर सुनकर सहसा विश्वास नहीं हुआ। लेकिन जब दुखद सूचना की पुष्टि की तो मैं स्तब्ध रह गया। मेरी उनके साथ बहुत सी स्मृतियाँ जुड़ी हैं जिन्हें आज मैं याद कर रहा हूँ। माध्यम साहित्यिक संस्थान के मध्य प्रदेश राज्य के प्रभारी और अट्टहास पत्रिका से जुड़े होने के नाते वे मेरे साथ निरंतर संपर्क में रहते थे। कुछ माह पूर्व उन्होंने ख्यात व्यंग्य पत्रिका 'अट्टहास' का मध्यप्रदेश के व्यंग्यकारों पर केन्द्रित अंक का सम्पादन बड़ी कुशलतापूर्वक किया था। अभी गत नवम्बर माह श्री भगवत दुबे (अध्यक्ष /कादम्बरी) पर केन्द्रित अट्टहास के अंक के सम्पादन और संकलन में उनकी महत्वपूर्ण भूमिका थी।बैंकिंग जैसे व्यवसाय से जुड़े होने के बावजूद आप शानदार व्यंग्य लिख रहे थे - बिलकुल हरिशंकर परसाई के परंपरा के अनुरूप। गत अगस्त में उन्होंने व्यंग्य पुरोधा हरिशंकर परसाई की जन्मशती के अवसर पर शानदार कार्यक्रम का जबलपुर में आयोजन कर एक कुशल प्रबंधक होने का परिचय दिया। 'व्यंग्यम' के माध्यम से अन्य प्रबुद्ध साहित्यकारों के सहयोग से गत आठ वर्षों से वे नियमित रूप से मासिक गोष्ठियाँ आयोजित कराकर व्यंग्य का जबलपुर में परचम लहरा रहे थे। इसे एक प्रकार से हरिशंकर परसाई की व्यंग्य ज्योति को निरंतर प्रज्वलित करते रहने के एक सार्थक प्रयास के रूप में देखा जाना चाहिए।

कादम्बरी संस्था के सम्मान हेतु मैंने उनके व्यक्तिगत आग्रह पर आवेदन किया था। लेकिन मुझे पता नहीं था कि मुझे व्यंग्य लेखन के लिए मिलने वाला उन्होंने अपने बड़े भाई की स्मृति में वित्त पोषित किया होगा। यह उनके औदार्य और पारस्परिक सम्मान की भावना का परिचायक है जिसे मैं कभी विस्मृत नहीं कर सकता। अट्टहास के तैतीसवें सम्मान समारोह में उन्हें १३ जुलाई को उपस्थित होना था लेकिन वे स्वास्थ्य सम्बन्धी कारणों से कारण दिल्ली नहीं आ पाए थे। अतः जब 9 नवंबर 2024 को मैं जबलपुर में 'डॉ रामकृष्ण पाण्डेय स्मृति सम्मान-२ ०२४ ' लेने आया तो उनका वह सम्मान पत्र भी साथ लेकर आया था। मिलने पर उनके चेहरे पर दिख रही चमक और उत्साह को देखकर कहीं से ऐसा नहीं लगता था वे

सचमुच में बीमार थे। इस कार्यक्रम के अवसर पर वे तीन दिन तक लगातार हमारे साथ साये की तरह रहे - पहले दिन सुबह -सुबह हमें ट्रेन से लेकर होटल तक छोड़ने आये। उसी दिन आयोजित ' कादंबरी' संस्था के सम्मान समारोह में हमें होटल से लेकर समारोह स्थल में पूरे समय रात्रि के नौ बजे तक साथ रहे। रात्रि में हमें होटल में छोड़ने आये। अगले दिन फिर नाश्ते के समय साथ रहे। फिर दस नवम्बर की शाम को व्यंग्यम की गोष्ठी में सभी अतिथियों के सम्मान में जुटे रहे और अगले दिन हमें ट्रेन में विदा तक करने आये। मेरे साथ अट्टहास के प्रमुख संपादक श्री अनूप श्रीवास्तव कहते थे कि हम उनके अतिथि हैं। भोजन पर पांडे जी और ताम्रकार जी अक्सर हमारे साथ रहा करते थे और साथ देने के लिए केवल सूप पीते थे कि कहीं हम अन्यथा न लें। इतना स्नेहिल और आत्मीय आतिथ्य तो कोई अपना नजदीकी रिश्तेदार भी नहीं करता। किसको पता था कि वह तीन दिनों का साथ हमारी अंतिम मुलाकात में बदल जायेगा। मैंने उनके भीतर एक जिंदादिल इंसान को देखा जो विपरीत परिस्थिति में भी हर कार्य खुद करके जीना चाहता था। उनकी प्यारी सी मोहक मुस्कान अब सदैव आँखों के सामने नाचती रहेगी। अभी तो उन्होंने साहित्य के लिए बहुत कुछ करना था। नियति को कौन रोक सकता है ? उनके असामयिक निधन से हिंदी व्यंग्य को जो क्षति हुई है वह अपूरणीय है। ऐसा लगता है कि व्यंग्य का एक सशक्त स्तम्भ गिर गया हो। उनके जाने से जहाँ जबलपुर और उनसे जुड़े लोग और परिवारजन अवश्य उनकी व्यक्तिगत कमी को अनुभव कर रहें होंगे तो वहीँ उनके सैकड़ों प्रशंसक और माध्यम साहित्यिक संस्था और अट्टहास के सुधी पाठक भी मेरी तरह उनकी रिक्ति को तीव्रता से अनुभव करेंगे। वैसे साहित्यकार कभी मरा नहीं करते, वे हमेशा अपने रचनाकर्म के माध्यम से सदा जीवित रहते हैं और विशाल ह्रदय के स्वामी और मेरे ऊपर अपनी अमिट छोड़ने वाले जय प्रकाश पांडे भी उसी प्रकार हमारी स्मृति में हमेशा साथ रहेंगे। मैं उनकी स्मृतियों को सहेजते हुए उन्हें अपनी और अट्टहास पत्रिका की ओर से विनम्र श्रद्धांजलि अर्पित करता हूँ। ॐ शांति।

श्री रामकिशोर उपाध्याय, कार्यकारी सम्पादक अट्टहास, नई दिल्ली

सरल हृदय के तीखे कलमकार थे जयप्रकाश पांडे - श्री प्रतुल श्रीवास्तव

ऐसा माना जाता है कि जो व्यक्ति जैसा सोचता-विचारता है, जैसा कार्य करता है वैसा ही दिखने लगता है, वैसी ही उसकी वाणी और स्वभाव भी हो जाता है। चिंतक, कवि, कहानीकार, व्यंग्यकार, शिक्षक, नेता सभी चेहरे और वाणी से पहचान लिए जाते हैं, किन्तु इसके विपरीत भाई जयप्रकाश पांडे की सौम्य-सुदर्शन छवि, मुस्कुराहट और मधुर वाणी याने की उनका टोटल "सॉफ्ट लुक" देखकर आभास नहीं होता था कि वे व्यंग्यकार के रूप में इतनी कड़वी - कठोर बात लिखने-कहने वाले व्यक्ति थे।

शासकीय अभियांत्रिकी महाविद्यालय, जबलपुर से स्नातकोत्तर एवं गुरुघासीदास वि वि बिलासपुर से सी.डी. ए. करके आप 1980 में भारतीय स्टेट बैंक में सेवारत हुए और 2016 में मुख्य प्रबंधक के पद से सेवानिवृत्त हुए। अब जिसकी स्वयं की आदत कामचोरों, भ्रष्टाचारियों, सामाजिक विसंगतियों और शासन-प्रशासन की कमजोरियों-गल्तियों को ताड़ने और उस पर करारा लिखने की थी उसे स्वयं तो अच्छा काम करके आदर्श उदाहरण प्रस्तुत करना ही पड़ता। सो भाई जयप्रकाश जी ने बैंक के कार्यकाल में उत्कृष्ट कार्यों पर 48 सम्मान प्राप्त कर अपना और पूरे परिवार व मित्रों का गौरव बढ़ाया। उनके द्वारा रचित व्यंग्य और कहानियों का प्रकाशन देश के प्रतिष्ठित समाचार पत्रों-पत्रिकाओं में हुआ। आकाशवाणी जबलपुर, भोपाल, रायपुर, बिलासपुर से प्रसारण हुआ। विचारपूर्ण श्रेष्ठ लेखन से उनके प्रशंसकों के साथ-साथ उनकी कीर्ति भी बढ़ती गई। उन्होंने परसाई स्मारिका, नर्मदा परिक्रमा, ई-अभिव्यक्ति पत्रिका आदि का संपादन किया। उनके प्रकाशित व्यंग्य संग्रह "डांस इंडिया डांस" की हर ओर चर्चा हुई। उनका एक और व्यंग्य संग्रह "रूप बदलते सांप" अभी अभी उस समय प्रकाशित होकर आया जब वे गंभीर रूप से अस्वस्थ होने के कारण नागपुर के एक चिकित्सालय में उपचार रत थे, अपने इस व्यंग्य संग्रह को लेकर वे बहुत उत्साहित थे। पुस्तक के सटीक शीर्षक के लिए उनकी मुझसे कई बार चर्चा हुई। अफसोस कि वे अपनी इस नव प्रकाशित पुस्तक को नहीं देख पाए। जयप्रकाश जी के सृजन पर उन्हें कबीर सम्मान, अभिव्यक्ति सम्मान, व्यंग्य यात्रा पत्रिका सम्मान, साहित्य सरोज पत्रिका सम्मान, कादम्बरी सम्मान सहित अनेक सम्मान मिले।

नवंबर 24 में जबलपुर में आयोजित एक समारोह में सुप्रसिद्ध व्यंग्यकार श्री अनूप श्रीवास्तव ने उन्हें अट्टहास और माध्यम का "व्यंग्य गौरव अलंकरण" प्रदान किया। वे कादम्बनी के अ. भा. व्यंग्य लेखन प्रतियोगिता के विजेता भी रहे हैं। जयप्रकाश जी आजीवन देश की विभिन्न साहित्यिक, सांस्कृतिक संस्थाओं से जुड़कर समाज में रचनात्मक वातावरण बनाने में सक्रिय रहे। भ्रमण में रुचि, ज्ञान पिपासा, मिलन सरिता और विश्वसनीयता जैसे गुणों के कारण वे जिससे मिलते उसे अपना बना लेते थे। जयप्रकाश जी के असमय निधन से उनके गृह नगर जबलपुर सहित देश के सुदूर क्षेत्रों में रहने वाले उनके मित्र अत्यंत दुखी हैं। साहित्य जगत ने न सिर्फ एक अच्छा लेखक वरन एक अच्छा व्यक्ति भी खो दिया।

ख्यातिलब्ध साहित्यकार डॉ. कुंदन सिंह परिहार के अनुसार "जयप्रकाश पांडे के हृदय में देश के करोड़ों वंचितों और लाचार लोगों के लिए पर्याप्त हमदर्दी थी। वे बार-बार हमारे समाज की "क्रोनिक" व्याधियों तक पहुंचने का प्रयास करते रहे। " डायमंड पॉकेट बुक्स के संपादक एम. एम. चंद्रा ने उनके बारे में लिखा था कि "जयप्रकाश जी शब्दों के तुलनात्मक प्रयोग से व्यंग्य को सहज सरल बना देते हैं। " जयप्रकाश जी का स्वयं का कहना था कि "जब कोई अनुभव, घटना, विचार या स्मृति कई दिनों तक मन-मस्तिष्क में उमड़ती-घुमड़ती रहती है तो कलम से कागज पर उतर जाती है। भाई जयप्रकाश के न रहने से साहित्य जगत में तो रिक्तता आई ही है मैंने भी हर छोटी - बड़ी बात पर विचार विमर्श करने वाला एक ऐसा जिंदा दिल मित्र खो दिया जिससे किसी न किसी संदर्भ में लगभग रोज मेरी बात होती थी।

इस वर्ष 2 जनवरी को अपने जन्मोत्सव पर जयप्रकाश जी हमारे बीच नहीं होंगे। उन्हें सादर श्रद्धांजलि।

श्री प्रतुल श्रीवास्तव

***संपर्क** - 473, टीचर्स कालोनी, दीक्षितपुरा, जबलपुर - पिन - 482002 मो. 9425153629*

कहाँ हैं जय प्रकाश? - डॉ सत्येंद्र सिंह

कहाँ गए वे लोग नहीं, कहाँ जाते हैं ये लोग कहना पड़ेगा। अभी नवंबर 2024 में ही फेसबुक पर जयप्रकाश भाई ने पूज्य ज्ञान रंजन जी को जन्मदिन की शुभकामनाएँ दीं थीं। जय प्रकाश जी की फेसबुक पर हर पोस्ट देखता था। उनके द्वारा दी गई शुभकामनाएँ देखकर मैंने ज्ञानरंजन जी फोन किया और उनको अपनी ओर से शुभकामनाएँ दीं। ज्ञानरंजन जी ने कहा कि मेरा जन्मदिन 21 नवंबर था भाई तो मैंने उनसे कहा कि मुझे जय प्रकाश पांडे की फेसबुक पोस्ट से आपके जन्मदिन के बारे में पता चला। जय प्रकाश पाण्डेय का नाम सुनते ही ज्ञान सर ने तुरंत कहा,सत्येंद्र, अजय प्रकाश बहुत बीमार हैं। अभी इलाज कराकर नागपुर से लौटकर आए हैं, अभी काफी ठीक हैं, उनसे बात कर लो उन्हें बहुत अच्छा लगेगा। नंबर मेरे पास था ही, मैंने तुरंत बात की। मैं 1985 से 1990 तक जबलपुर में रहा। ज्ञानरंजन जी के आवास पर होने वाली गोष्ठियों में जय प्रकाश जी से मुलाकात होती। उनके साथ परसाई जी के यहां जाना भी हुआ। मेरे साथ अरुण श्रीवास्तव हमेशा रहते, रहते क्या वे ही मुझे लेकर जाते। लीलाधर मंडलोई जी और सुरेश पांडेय जी की उपस्थिति विशेष रूप से रहती। मयंक जी, कुंदन सिंह परिहार जी, राजेन्द्र दानी जी, द्वारका प्रसाद गुप्त गुप्तेश्वर, बाजपेई जी, अरुण पांडेय, विवेचना के हिमांशु जी और जिन जिन की याद आई, सबके बारे में खूब बात हुई।

जय प्रकाश जी से आत्मीयता का एक कारण मुरलीधर नागराज भी रहे क्योंकि मुरलीधर नागराज जी से मित्रता मुंबई में ही हो गई थी जब तापसी जी ने सुर संगम का पुरस्कार जीता था। उस समय राजेश जौहरी हमारे बीच की कड़ी थे। मुंबई से जबलपुर ट्रांसफर पर आने पर मैं प्रसिद्ध सीबीआई ऑफिसर आई.एन. आर्य जी के साथ उनके जिस रेलवे क्वार्टर में रहता था उसके पास ही स्टेट बैंक की शाखा थी, जिसमें मुरलीधर नागराज थे। जय प्रकाश जी मुरलीधर जी के साथी और मित्र थे ही। इस प्रकार जयप्रकाश जी से दोहरी आत्मीयता थी। सन् 1990 में कोल्हापुर आने के बाद जबलपुर जाना नहीं हुआ परंतु फेसबुक पर जयप्रकाश जी से जुड़ा रहा। जब बीमारी की बात सुनकर मैंने उनसे बात की उन्होंने अपना पूरा हाल बताया की कब कब, क्या-क्या हुआ। नागपुर कब गए। कितने दिन दिन इलाज चला और एक ऑपरेशन होने वाला

है। सब ऐसे बता रहे थे जैसे किसी और के बारे में बता रहे हों। पूरी उम्मीद थी उन्हें होने वाला ऑपरेशन भी सफल रहेगा। इन्हीं उम्मीद के साथ हमारी बातचीत खत्म होने वाली थी कि उन्होंने अचानक कहा कि हम लोग एक डिजिटल पत्रिका ई-अभिव्यक्ति निकलते हैं और स्टेच बैंक ऑफ इंडिया के कंप्यूटर विशेषज्ञ हेमंत बावनकर जी उसका पूरा काम देखते हैं। उसमें आप लिखा कीजिए और उन्होंने मुझसे अपना संक्षिप्त परिचय, फोटो और रचना व्हाट्सएप पर ही भेजने के लिए कहा और मैंने भेज दी। उन्होंने तुरंत उन्होंने ब्यौरा मेरा हेमंत जी को भेज दिया और 27 नवंबर 2024 को मैं हेमंत जी ने मुझे ई-अभिव्यक्ति से जोड़ लिया। चार पांच अंकों में ही मेरी रचना प्रकाशित हुई हैं। एक हफ्ते से मैं फेसबुक व्हाट्सएप कुछ नहीं देख पाया, पता नहीं क्यों, लेकिन आज हेमंत जी का मैसेज और ई-अभिव्यक्ति पर जब देखा तो का पूरा अंक जयप्रकाश पांडे जी को समर्पित करते हुए प्रकाशित किया है। तब मुझे पता चला जयप्रकाश भाई नहीं रहे। पता अंदर से बहुत कुछ टूट सा गया। ई-अभिव्यक्ति पर जय प्रकाश जी पर सभी मित्रों की संवेदनाएँ पढीं। फेसबुक देखा तो सैकड़ों मित्रों ने उन्हें श्रद्धा सुमन अर्पित किए हैं। कैसे कोई बात करते-करते, हंसता - खेलता आदमी चला जाता है, कहाँ गए वे लोग स्तंभ उन्होंने शुरू किया और खुद कहाँ चल दिए? सब कुछ पढकर दिल बहुत दुखी हुआ। जय प्रकाश जी जैसे लोग बिरले ही होते हैं। वे कभी अपनी व्यक्तिगत समस्या से घबराने वाली व्यक्ति नहीं थे आश्चर्य है कहाँ गए वे लोग कहने वाले प्रश्न छोड़ कर चले गए कि कहाँ जाते हैं लोग ?

मेरी विनम्र श्रद्धांजलि स्वीकार करें जय प्रकाश।

डॉ सत्येंद्र सिंह, पुणे महाराष्ट्र, मोबाइल : 99229 93647

सहज सरल जिंदादिल व्यक्तित्व के धनी - डॉ. प्रदीप शशांक

जय प्रकाश पांडे जी, क्या कहूँ इस शख्सियत के विषय में ? सहज, सरल, सौम्य, सदा हंसते हंसाते रहने वाले जिंदा दिल व्यक्तित्व के धनी, प्रेमी निच्छल हृदय, एक बार जो भी इनसे मिला इन्हीं का हो गया। अच्छे व्यक्तियों के लिये जितनी उपमा होती हैं वह इस हरदिल अजीज के लिए भी कम पड़ जावेंगी।

जय प्रकाश जी के साहित्यिक कृतित्व पर अनेक मित्र प्रकाश डालेंगे। हम केवल उनके दिलदार व्यक्तित्व के विषय में बात करेंगे।

पांडे जी से हमारा परिचय लगभग 8 वर्ष पुराना है। किसी पत्रिका में प्रकाशित मेरा व्यंग्य पढ़कर उन्होंने हमें फोन किया और व्यंग्य की तारीफ करते हुए हमें बधाई दी। प्रथम फोन के बाद ही उनकी आत्मीयता ने हमें इतना प्रभावित किया कि हम अच्छे मित्र बन गये। उसके बाद शहर में आयोजित अनेकों गोष्ठियों में मुलाकात होती रही और आपसी बातों में हंसी मजाक और ठहाकों के बीच हमारी मित्रता परवान चढ़ती गई। प्रायः सप्ताह, 15 दिन में उनसे फोन पर एक दूसरे की साहित्यिक गतिविधियों पर चर्चा होती रहती थी। ठहाकों के बीच उनका मिठास से भरा "जय हो" कहना, अंतर्मन तक खुशियों से भर देता था।

कोरोना काल के पहले एक दिन शाम 4 बजे उनका फोन आया, शशांक तुम आराम तो नहीं कर रहे हो? हमने कहा -आराम का तो समय है, लेकिन आप के लिये तो समय ही समय है। उन्होंने कहा- मैं तुम्हारे ही क्षेत्र में हूँ, श्री राम इंजीनियरिंग कॉलेज में, बस पांच मिनिट में तुम्हारे घर आ रहा हूँ। हमने कहा- स्वागत है आपका।

पांच मिनिट बाद वह हमारे घर पर थे। बातचीत के दौरान उन्होंने बताया कि उनके लड़के ने श्री राम इंजीनियरिंग कालेज में कैंटीन ली है अतः मैं आज यहां आया था सो सोचा तुमसे मिलता चलूं। श्री राम इंजीनियरिंग कॉलेज से लगी हुई हमारी कालोनी है।

घर पर वह प्रथम बार आये थे, बातों और ठहाकों के दौर के बीच में हमारी श्रीमती जी ने चाय, नमकीन लाकर रख दिया। पांडे जी की बातों का प्रभाव ऐसा था कि श्रीमती जी भी आकर हम लोगों के पास बैठ गईं और उनकी बातों का आनंद लेने लगीं। बातों में मशगूल हम लोगों को पता ही नहीं चला कि कब 6 बज गये।

श्रीमती जी को ऐसा बिल्कुल भी महसूस नहीं हुआ कि पांडे जी से पहले बार मिलीं हैं, ऐसा लगा कि वर्षों की जान पहचान है।

फिर तो जब भी वह कालेज आते तो हमारे घर जरूर आते, आते ही कहते - भाभी जी चाय बहुत अच्छी बनाती हैं तो हम भाभी जी के हाथ की बनी चाय पीने आये हैं।

हाजिर जवाबी, और मजाकिया स्वभाव के धनी पांडे जी को हमने 2024 की रैंकिंग में 43 वें नंबर पर आने हेतु बधाई दी तो उन्होंने ठहाका लगाते हुए कहा - धन्यवाद।

किंतु हमें असंतोष है नंबर एक के आदमी को इतने पीछे कर दिया। आज आत्ममुग्धता और महात्वाकांक्षा का युग है हर आदमी नंबर 1 वाला और ये लोग राजनीति खेल कर कटुता पैदा कर रहे हैं। मजाक में ही उन्होंने उस सूची पर कटाक्ष कर दिया।

दो वर्ष पूर्व 23 दिसंबर 22 को पांडे जी के मित्रों का माडेलियन ग्रुप(जबलपुर मॉडल हाई स्कूल में पढ़े उनके साथी मित्र) का ओरछा (राम राजा का किला) पिकनिक मनाने हेतु जाने का प्रोग्राम बना। सभी 65 +उम्र के उनके मित्र सपत्नीक जाने वाले थे। हमारे साले साहब शेखर सिंह राजपूत भी उस ग्रुप में थे। इत्तेफाक से बस में 3 सीट खाली थीं तो हमारे साले का फोन आया और ओरछा चलने को कहा, किंतु उस समय मेरे घुटने में ज्यादा तकलीफ होने का कारण हमने जाने से मना कर दिया, किंतु श्रीमती जी को भेज दिया। हमारी श्रीमती जी अपनी भाभी के साथ जब बस में आगे की सीट पर बैठी थीं तभी पांडेय जी भी अपनी श्रीमती के साथ बस में चढ़े और हमारी श्रीमती जी को देखकर हैरान रह गये और सोच में पड़ गये कि यह यहाँ कैसे? खैर, नमस्कार करने के बाद वह भी पीछे जाकर अपने अन्य दोस्तों के साथ बैठ गये।

कुछ देर बाद हमारी श्रीमती जी का फोन हमारे पास आया और उन्होंने बताया कि हम लोग आराम से बस में बैठ गये हैं। उन्होंने बताया कि पांडे जी भी आये हैं अपनी श्रीमती जी के साथ।

हमने पांडे जी को फोन लगाया, फोन उठाते ही उन्होंने कहा, भाभी जी बस में हैं लेकिन ... हमने उनकी शंका का समाधान करते हुए कहा- आप के माडेलियन ग्रुप में हमारी मॉडल भी साथ जा रही हैं, वह आपके

मित्र शेखर की बहन हैं। अरे..तुमने पहले कभी नहीं बताया, शेखर हमारे साथ बाजू में ही बैठे हैं, लो बात कर लो। हमने अपने साले साहब को बताया कि पांडे जी हमारे भी पुराने साहित्यिक मित्र हैं।

उसके बाद पांडे जी, हमारी श्रीमती जी को शेखर के बहन होने के नाते और ज्यादा सम्मान देने लगे। जब भी फोन करते हम दोनों से ही बात करते।

लगभग 8माह पूर्व शायद अप्रेल में ही उन्होंने बताया था कि पेट में कुछ परेशानी है। अतः यहां पर डॉक्टर को दिखाया है लेकिन आराम नहीं लग रहा है। उसके बाद वे बांबे गये वहां जांच के दौरान उनको आंत में कैंसर की शिकायत बताई। कुछ दिनों बाद वह नागपुर भी गये। बाद में जबलपुर में कीमो करवाने सप्ताह में एक बार अस्पताल जाते थे। एक बार हमने फोन लगाया तो घंटी पूरी गई लेकिन फोन नहीं उठा। हमें लगा कि कहीं व्यस्त होंगे। कुछ देर बाद उनका फोन आया और उन्होंने बताया कि उनका कीमो हो रहा था। हमने उनसे कहा कि आप आराम करो, बाद में बात करेंगे लेकिन उन्होंने हंसते हुए कहा अरे नहीं, नर्स अपना काम कर रहीं है, हम अपना काम करें और उन्होंने हंसते हुए हमसे बात करना शुरू कर दी। इतने दर्द के बाद भी उन्होंने हमें यह महसूस नहीं होने दिया।

अभी 27 नवंबर को जब उनसे बात हुई तो उन्होंने बताया कि कीमो पूरे हो गये हैं, अब नागपुर जाकर टेस्ट करवाना है कि कितने परसेंट रिकवरी हुई है। हमने कहा कि आप जल्द ठीक हो कर आओ, बहुत दिनों से घर नहीं आये हो। फोन स्पीकर में ही था, हमारी श्रीमती जी ने भी उनसे कहा कि आप जल्दी अच्छे होकर आओ, चाय पीने। उन्होंने कहा- हमने चाय पीना छोड़ दिया है किन्तु आपके हाथ की चाय पीने एक बार जरूर आऊंगा।

हम लोग उनके आने का इंतजार ही करते रह गये।

इस बीच उनके निधन के समाचार की अफवाहें भी उड़ने लगीं। हम सब स्तब्ध थे, किंतु उनकी जीवटता बार बार उन्हें मौत के मुंह से बाहर लाती रही।

25 दिसंबर को साले साहब का फोन आया और उन्होंने बताया कि पांडे जी को जबलपुर लेकर आ गये हैं और वह यहां पर गेलेक्सी अस्पताल में आई सी यू वार्ड में भर्ती हैं। 25 दिसंबर की शाम को 5.30 पर हम श्रीमती जी के साथ गेलेक्सी अस्पताल पांडे जी को देखने पहुंचे। उनकी हालत देखकर दिल धक्क से हो गया। इतना दिलदार, हंसमुख इंसान की ऐसी स्थिति, आंखें देख रही थी उनको लेकिन दिल को विश्वास ही नही रहा था कि यह पांडे जी ही हैं। उनके बेड के पास उस समय केवल उनकी पुत्री ही थी। श्रीमती जी

ने उसे सांत्वना दिया और कहा कि पांडे जी जल्दी ठीक हो जावेंगे, पुत्री की आंखों में अश्रु झिलमिलाने लगे।

नियति को शायद यही मंजूर था। 26 दिसंबर की सुबह उनके निधन की खबर उनके पुत्र की ओर से मिली।

भगवान को भी अच्छे लोगों की शायद ज्यादा जरूरत होती है तभी उन्हें अपने पास बुला लिया।

वे सहृदय, हंसमुख एवं दिलदार व्यक्तित्व के स्वामी थे। सदा हंसते ठहाके लगाते रहते थे। उनका यूं अचानक चले जाना हम सभी मित्रों की व्यक्तिगत क्षति है। उन्हें अश्रुपूरित विनम्र श्रद्धांजलि।

*****

डॉ. प्रदीप शशांक, श्रीकृष्णम ईको सिटी, श्रीराम इंजीनियरिंग कॉलेज के पास, कटंगी रोड, माढ़ोताल, जबलपुर, म.प्र. 482002 मोबाइल -9131485948

व्यंग्य लेखन में परसाई की परंपरा को आगे बढ़ाया - श्री राजशेखर चौबे

पूरे देश में शायद एक भी ऐसा व्यंग्यकार नहीं होगा जिससे जयप्रकाश पांडे जी की बात नहीं हुई हो। वे लगभग सभी से बात करते थे। आपके अच्छे व्यंग्य पर वे जरूर दाद देते थे, मैसेज करते थे जब उन्हें लगता तो फोन भी जरूर करते थे। मुझे भी उनका सानिध्य मिला। मेरी उनसे पहली मुलाकात 2016 में जबलपुर में अट्टहास के कार्यक्रम में हुई थी। इसके बाद उनसे तीन-चार बार मुलाकात हुई और सभी मुलाकातें यादगार बन गई। व्यंग्य के एक कार्यक्रम में वे रायपुर भी आए थे। जून 2024 में जबलपुर जाना हुआ पर उनसे मुलाकात नहीं हो सकी थी। फोन पर जरूर बात हुई थी। तभी उन्होंने अपनी तबियत के बारे में बताया था। उस समय भी वे काफी पॉजिटिव थे और ऐसा नहीं लग रहा था कि वे इतनी जल्दी हम सब को छोड़कर चले जाएंगे। वे जबलइपुर के थे और उनकी आवाज में जबलपुरिया टोन था। उनकी आवाज में एक अलग तरह की मिठास थी। लगभग डेढ़ महीने पहले फोन आया कि उनके मित्र मेरे छत्तीसगढ़ी व्यंग्य को अपनी पुस्तक में लेना चाह रहे हैं। उस समय भी लंबी बात हुई थी। उन्होंने व्यंग्य लेखन में परसाई की परंपरा को आगे बढ़ाया। उनके कई व्यंग्य और व्यंग्य संग्रह डांस इंडिया डांस को हमेशा याद किया जाएगा। उनके व्यंग्य "अस्थि विसर्जन का लफड़ा " काफी चर्चित हुआ था जिसे व्यंग्य यात्रा पत्रिका ने पुरस्कृत किया था। जयप्रकाश जी हम सब को छोड़कर चले गए हैं परंतु वे हमेशा याद किए जाएंगे। उन्हें विनम्र श्रद्धांजलि। भगवान उनकी आत्मा को शांति प्रदान करे और परिवार वालों, मित्रों व शुभचिंतकों को यह दुख सहन करने की शक्ति प्रदान करे।

- **राजशेखर चौबे** रायपुर

साहित्य के सूर्य - जय प्रकाश पांडे जी - श्री रमाकांत ताम्रकार

श्री जय प्रकाश पांडे जी जैसा व्यक्ति अब मिलना असम्भव है क्योंकि जिनका कोई नहीं होता उनके श्री पांडे जी होते थे. हरएक व्यक्ति के साथ श्री पांडे जी खड़े थे जिससे उनके साथ जो भी व्यक्ति होता वह अपने को सबल मानता था. अब इस समय बहुत-बहुत ही बड़ी रिक्तता आ गई है. जिसकी पूर्ति असंभव है. श्री पांडे जी अद्भुत जिजीविषा एवं दृढ़ संकल्प के धनी थे. उनका दृष्टिकोण बिल्कुल स्पष्ट था. इतनी बड़ी पोस्ट पर होने के बाद भी सहज और सरल हृदय थे.

हमने कई साहित्यिक यात्राएँ की जिसमें मुझे उनका साथ कृष्ण और सुदामा सरीखा मिलता था. साहित्यिक कार्यक्रमों में आप मुझे हमेशा आगे रखते थे. 9वे दशक से हमारा साथ था. उन्होने साहित्य जगत को अमृतमय योगदान दिया. श्री परसाई जी के जन्मदिन के अवसर पर उनके विरोध के बावजूद बहुत ही उत्कृष्ट कार्यक्रम किया था जिसकी पूरे देश में प्रशंसा हुई. इसी प्रकार श्री परसाई जी का उत्कृष्ट प्रथम साक्षात्कार भी आपने लेकर सबको आश्चर्यचकित कर दिया था. एसे ही उन्होंने अनेक कार्यक्रमों का आयोजन किया. जिनकी चर्चा आज भी होती है. अनेकों शीर्षस्थ सम्मान उत्कृष्ट लेखन हेतु उन्हें मिले. जब कोई उन्हें सम्मानित करने की बात कहता तो वे किसी दूसरे अच्छे लेखक का नाम सुझाते. पुरूस्कार समितियों में वे बिल्कुल पारदर्शिता और निष्पक्षता से अडिग होकर अपना पक्ष रखते.

आप ई-अभिव्यक्ति पत्रिका के सम्पादक, व्यंग्य की महत्वपूर्ण पत्रिका अट्टहास के अतिथि सम्पादक के साथ-साथ अनेकों पत्रिकाओं का संपादन करते रहते थे. वर्तमान में आप व्यंग्य के लिए कटिबद्ध थे. इसलिए व्यंग्य के उन्नयन के लिए आपने जबलपुर नगर के व्यंग्यकार का एक समूह व्यंग्यम बनाया. जिसमें पिछले साढ़े आठ साल से (लगभग) लगातार व्यंग्य गोष्ठियों का आयोजन अपने घर के लॉन में आयोजित कर रहे थे. य़ह कार्यक्रम इतनी सादगी और गंभीर विमर्श का होता है जिसकी चर्चा संपूर्ण देश में हो रही है. व्यंग्य के प्रति उनका स्पष्ट और सटीक नजरिया था.

आप को जब पता चला कि कैंसर हो गया है तब उनकी य़ह दृढ़ता थी कि मैं कैंसर को हरा दूँगा. वे कभी भी कैंसर से डरे नहीं. उन्होंने समान्य रूप से 11 कीमोथेरेपी कराई. हँस मुख और सहयोगी भावना से अंतिम समय तक लगे रहे. उनका जुझारूपन हमारी प्रेरणा है. वे अक्सर मुझसे और अपने साथियों से कहते

कि जब तक मैं जिंदा हूँ तब तक व्यंग्यम की गोष्ठी मेरे ही घर में होगी और यह वचन उन्होंने निभाया भी. वे अक्सर मुझसे कहते थे कि अब व्यंग्यम तुम लोगों को चलाना है, इस व्यंग्य की मशाल को कभी बुझने नहीं देना कुछ स्वार्थी लोग इस पर आधिपत्य जमाने की कोशिश करेंगे पर डटे रहना. मैं उनसे कहता आप कहाँ जा रहे है अपन सब मिलकर ही व्यंग्य विधा का काम करेंगे. वो तो करेगें ही पर किसी का कोई भरोसा नहीं है अब देखो न सुमित्र जी चले गए. एसा वे कहते थे. शायद उन्हें आभास हो गया था किन्तु उन्होंने इस बात को किसी पर भी जाहिर नहीं किया.

मेरी उनसे दिन में 3 से 4 बार चर्चा होती थी और हर चर्चा में व्यंग्य एवं साहित्य के उन्नयन की चर्चा होती जिसमें नई नई योजना नए कार्यक्रमों की गहन बात होती. हम एक-दूसरे के व्यंग्य की मंजाई करते फिर उसे प्रस्तुत करते.

12 दिसम्बर को नागपुर जाने से पहले करीब लगभग डेढ़ घंटे हमारी चर्चा हुई थी. फिर नागपुर में ऑपरेशन के पहले उन्होंने कहा मैं ऑपरेशन कराकर अधिकतम सोम या मंगल तक लौट आऊंगा फिर अपन व्यंग्यम की गोष्ठी करेगें. मैंने कहा पहले तबीयत फिर गोष्ठी की बात करेंगे. तब उन्होंने जोरदार शब्दों में कहा अरे सब ठीक है थोड़ा ऑपरेशन हो जाएगा तो और ठीक हो जाएगा. पर क्या पता था कि मेरी उनसे यह अंतिम बात है. नागपुर से लाकर जब उन्हें जबलपुर के अस्पताल में भर्ती किया तब हम सभी व्यंग्यम के साथी मिलने गए थे. मैंने उनके कंधे पर हाथ रखकर आवाज लगाई तो उन्होंने आंख खोली, आंखों में बहुत तेज था कुछ और करने की ललक जो हमारी चर्चा में होती थी. पर ईश्वर को कुछ और मंजूर था और 26 दिसम्बर 24 को श्री पांडे जी को अपने पास बुला ही लिया. हम सब प्रति क्षण प्रार्थना करते ही रह गए.

श्री जय प्रकाश पांडे जी के जाने से मेरे जीवन में रिक्तता आ गई है. पर मुझे विश्वास हैं कि श्री पांडे जी सूक्ष्म रूप में हम सबके साथ है उन्हीं की प्रेरणा से उनके विचारों को आगे ले जाना है.

मैं अपने सबल सच्चे मित्र के श्रीचरणों में विनम्र श्रध्दांजलि इस आशय से दे रहा हूँ कि वे सदैव हमारे साथ रहेंगे.

श्री रमाकांत ताम्रकार

जबलपुर मोबाइल 9926660150

मार्गदर्शक स्वर्गीय जयप्रकाश पांडे जी - श्री श्याम खापर्डे

स्वर्गीय जय प्रकाश पांडे जी से मेरी पहचान फेसबुक पर हुई थी। मैं उनके व्यंग्य का प्रशंसक था. हम दोनों भारतीय स्टेट बैंक में अधिकारी थे। परंतु हम दोनों का परिचय नहीं था, मैंने उनका नाम जरुर सुना था और वह बहुत ही शानदार व्यंग लिखते थे। मैं भी उनके व्यंग्य को पसंद करता था और अपनी टिप्पणी उन्हें भेजता था वह भी मेरी कविताओं के प्रशंसक थे और मेरी कई बार प्रशंसा करते थे। उन्होंने मुझे एक बार कहा कि आपकी दो-तीन कविताएं मुझे भेजिए मैं अभिव्यक्ति में प्रयास करता हूं मैंने अपनी तीन कविताएं भेजी उनका फोन आया कि कविताएं अच्छी है, मैं श्री हेमंत बावनकर जी को भेजता हूं वह संपादक है वह आपसे संपर्क करेंगे। आप उन्हें संक्षिप्त में अपना परिचय दे देना। कुछ देर के बाद श्री हेमंत बावनकर जी का फोन आया और उनसे पहली बार बातचीत हुई उन्होंने मेरी कविताएं स्वीकृत की और मेरा स्तंभ " क्या बात है श्याम जी " की शुरुआत ई-अभिव्यक्ति पर हुई।

स्वर्गीय जयप्रकाश पांडे जी से मेरी पहली मुलाकात भोपाल में भारतीय स्टेट बैंक के कविता के लिए साहित्य के सम्मान के लिए आयोजित कार्यक्रम में हुई जहां मुझे भी आमंत्रित किया गया था।

सम्मान के बाद मैंने अपनी कविता का पाठ किया जिसे सुनकर वह बहुत प्रसन्न हुए उन्होंने मेरी प्रशंसा की और कविता के लिए बधाई दी। उसके बाद हम दोनों अच्छे मित्र बन गए।

दूसरी बार जब वह अट्टहास के " परसाई "अंक के अतिथि संपादक थे तब मैंने उनसे उस अंक की एक प्रति मंगवाई, उन्होंने भेजी और मुझसे कहा इसको पढ़ कर आप इस अंक की समीक्षा लिखिए . मैंने उनसे कहा कि मुझे समीक्षा लिखना नहीं आता वह बोले की प्रयास करो और लिखो। मैंने उस अंक कों पढ़कर अपनी तरफ से प्रयास किया और समीक्षा लिखकर उनको भेजा।

मेरी समीक्षा को पढ़कर उन्होंने मुझे फोन किया और कहां कि आपने बहुत मेहनत की है और यह समीक्षा लिखी है जो बहुत ही सुंदर है और मेरी उम्मीद और अपेक्षाओं से भी बढ़कर है मैंने यह समीक्षा कई ग्रुप में भेजी हैं और पेपर में भी भेजी है, वह अभिव्यक्ति में भी प्रकाशित हुई थी।

उनका हमेशा मार्गदर्शन मुझे मिलता रहा. वह मेरे लिए मित्र से भी बढ़कर थे, मैं अपनी बेटी के यहां कटनी आया हुआ हूं और उनसे मिलने अगले सप्ताह जबलपुर जाने वाला था, अचानक उनके स्वर्गवास का समाचार फेसबुक में पढ़कर बहुत ही दुख हुआ .मेरा मन उसे दिन से व्याकुल है और अंतकरण दुख से भर गया है।

मैंने एक अच्छा मित्र, मार्गदर्शक, जान से भी प्यारा साथी खो दिया है इसका दुख मुझे जीवन पर्यंत रहेगा।

ईश्वर मृत आत्मा को अपने चरणों में स्थान दें एवं उनके परिवार को यह दुख सहने की क्षमता दे यही प्रार्थना है।

उनको समर्पित एक कविता आपसे साझा करना चाहूँगा --

☆ जयप्रकाश पांडे ☆

तुम मंझधार में हमको
छोड़ कर चले गए
स्नेह के धागों को
तोड़ कर चले गए

तुम आज के युग के
निर्भीक कलमकार थे
शब्दों में जिसके चुभन हो
वो व्यंग्यकार थे
विसंगतियों को चित्रित करते
चित्रकार थे
" परसाई "के व्यंग्यों के
सच्चे पैरोकार थे
क्या खता हुई
जो मुंह मोड़ कर चले गए ?
स्नेह के धागों को
तोड़ कर चले गए

तुमने मुझे लिखने की
कला सिखाई थी
प्रोत्साहित किया
मेरी हिम्मत बंधाई थी
शब्दों के अर्थ समझाए
सही राह दिखाई थी

मेरी कविता सुप्त थी
तुमने जीवंत बनाई थी
क्या सजा दी है
मेरे सर गम का घड़ा
फोड़कर चले गए
स्नेह के धागों को
तोड़ कर चले गए ?

तुम्हारे शोक में
हर इंसान रो रहा है
जमीं रो रही है
आसमान रो रहा है
कलम रो रही है
व्यंग्य का
हर दृष्टिकोण रो रहा है
व्यंगम के वह तीर और
उच्चारण रो रहा हैं
क्या मिला
चाहने वालों को
अश्रुओं से जोड़कर चले गए ?
स्नेह के धागों को
तोड़ कर चले गए

तुमको भूलना भी हमको
कितना मुश्किल है
कैसे द्रवित ना हो
हमारे सीने में भी दिल है
सब उदास है
सूनी सूनी महफिल है
तुम्हें छीन ले गया
विधाता कितना संगदिल है
क्या हुआ जो
तुम झंझोड़ कर चले गए ?
स्नेह के धागों को
तोड़ कर चले गए

शोकाकुल परिवार और मित्र है
नियति का भी खेल विचित्र है
तुम सहज सरल स्पष्टवादी हो
हर कार्य साफ सुथरा और चरित्र है
क्यों आइना दिखा कर
कचोट कर चले गए ?
तुम मंझधार में हमको
छोड़कर चले गए
स्नेह के धागों को
तोड़ कर चले गए /

☆

श्री श्याम खापर्डे भिलाई जिला दुर्ग छत्तीसगढ़

जयप्रकाश पांडेय जी की स्मृति में... - श्री राकेश कुमार

हमारा बैंक : हमारी कहानी समूह में 10 अप्रैल 2021 को हम सब के प्रिय श्री जय प्रकाश पांडे जी ने सभी सदस्यों से आग्रह किया था कि आज सभी सदस्य आईना देखकर कुछ भी लिख कर ग्रुप में साझा करें। वो दिन हमारी जिंदगी का एक टर्निंग पॉइंट था। उनकी प्रेरणा से हमने भी कुछ लिखने का प्रयास किया और संलग्न लेख लिखा था।

आज उनकी स्मृति में उसी लेख को आप सबके के साथ पुनः शेयर कर रहा हूं। 🙏

☆ जीवन की बैलेंस शीट ☆

हमारे प्रिय मित्र ने आदेश दिया कि आइने के सामने जाकर आज अपनी जिंदगी का लेखा जोखा पेश करो। आजकल समय कुछ नेगेटिव बातो का है तो हमे भी लगने लगा कहीं चित्रगुप्त के सामने पेश होने की ट्रेनिंग तो नहीं हो रही। अभी तो जिंदगी शुरू की है रिटायरमेंट के बाद से।

खैर, हमने इंटरव्यू की तैयारी शुरू कर दी और अपनी सबसे अच्छी वाली कमीज़ (जिससे हमने स्केल 3 से लेकर 5 के interview दिए थे वो मेरा lucky charm थी) पहन, जूते पोलिश कर आइना खोजने लगे अरे ये क्या आइना कहां है मिल नहीं रहा था, मिलता भी कैसे आज एक वर्ष से अधिक हो गया जरूरत ही नहीं पड़ी।

श्रीमती जी से पूछा तो बोली क्या बात है अब Covid की दूसरी घातक लहर चल पड़ी है तो आपको सजने संवरने की पड़ी है, आप उस मोबाइल में ही लगे रहो। एक साल से सब्जी की दुकान तक तो गए नहीं अब जब सारी दुनिया दुबक के पड़ी है और आपको झुल्फे संवारने की याद आ रही है।

हमने उलझना ठीक नहीं समझा और बैठ गए मोबाइल लेकर, दोपहरी को जैसे ही श्रीमतीजी नींद लेने लगी हम भी अपने मिशन में लग गए और आइना खोज लिया। एक निगाह अपनी नख से शिखा तक डाली और थोड़ी से चीनी खाकर चल पड़े। अम्माजी की याद आ गई जब भी घर से किसी अच्छे काम के लिए

जाते थे तो वो मुंह मीठा करवा कर ही बाहर जाने देती थी और आशीर्वाद देकर कहती थी जाओ सफलता तुम्हारा इंतजार कर रही है। हमने भी मन ही मन अपनी सफलता की कामना कर ली।

जैसे ही आईने के सामने पहुंचे मुंह से निकल ही रहा था May I come in, sir लेकिन फिर दिल से आवाज़ आई अब तुम स्वतंत्र हो, डरो मत, आगे बढ़ो। आईने में जब अपने को देखा तो लगा ये कौन है लंबी सफेद दाढ़ी वाला पूरे चेहरे पर दूध सी सफेदी देख कर निरमा washing powder के विज्ञापन की याद आ गई।

अपने आप को संभाल कर हमने अपने कुल देवता का नमन किया।

पर ये क्या? मन बहुत ही चंचल होता है विद्युत की तीव्र गति से भी तेज चलता है हम भी पहुंच गए कॉलेज के दिनों में स्वर्गीय प्रोफ सुशील दिवाकर की वो बात जहन में थी जब हमारी बढ़ी हुई दाढ़ी पर उन्होंने कहा था " not shaving" तो हमने एकदम कहा था " no sir Saving" वो खिल खिला कर हंसने लगे। बहुत ही खुश मिजाज़ व्यक्ति थे।

अब कॉलेज के प्रांगण में थे तो प्रो दुबे एस एन की याद ना आए ऐसा हो ही नहीं सकता, economics को सरल और सहज भाव में समझा देते थे आज भी उनकी बाते ज़ुबान पर ही रहती है।

एक दिन कक्षा में demand और supply पर चर्चा हो रही थी। उन्होंने द्वितीय विश्व युद्ध के बाद की परिस्थितियों का वर्णन करते हुए बतलाया की सरकार जब अपने स्तर पर मज़दूर को रोज़गार देती है तो उससे demand निकलती है, मजदूर पेट भरने के बाद कुछ अपने पर खर्च करने की सोचता है, अपनी shave करने के लिए बाज़ार से एक blade खरीदता है, और शुरू हो जाती है Demand, दुकानदार, होलसेलर को ऑर्डर भेजता है और होलसेलर फैक्ट्री को ऑर्डर भेजता है, फैक्ट्री जो बंद हो गई थी मजदूर लगा कर फैक्ट्री चालू कर देता है और रोज़गार देने लगता है। कैसे एक blade से रोज़गार शुरू होता है।

अपनी लंबी दाढ़ी देख कर हम भी आपको कहां से कहां ले गए, इसलिए आइना नही देख रहे थे हम आजकल।

टीप - हमने किसी दाढ़ी बढ़ाए हुए को भी आइना दिखाने की कोशिश नहीं की। 😁

श्री राकेश कुमार - B 508 शिवज्ञान एनक्लेव, निर्माण नगर AB ब्लॉक, जयपुर-302 019 (राजस्थान) मोबाईल 9920832096

"व्यंग्य लोक स्व. जयप्रकाश पाण्डेय स्मृति व्यंग्य सम्मान" की घोषणा - श्री रामस्वरूप दीक्षित

मित्रो

हमारे व्यंग्यकार साथी स्व. जयप्रकाश पांडेय जी की स्मृति को अक्षुण्य बनाए रखने के लिए हमने एक निर्णय लिया है।

व्यंग्य लोक पत्रिका की तरफ से हर वर्ष उनकी स्मृति में 5000 ₹ (पांच हजार रुपये) का एक पुरस्कार, किसी व्यंग्यकार को दिया जाएगा।

स्व. जयप्रकाश पाण्डेय

पुरस्कार का नाम होगा - व्यंग्य लोक स्व. जयप्रकाश पांडेय स्मृति व्यंग्य सम्मान

पहला पुरस्कार पांडेय जी के शहर जबलपुर में एक गरिमामय समारोह आयोजित कर दिया जाएगा।

यह उनके प्रति व्यंग्य लोक की विनम्र श्रद्धांजलि समझी जाए।

साभार - श्री रामस्वरूप दीक्षित - व्यंग्य लोक

अविस्मरणीय संस्मरण - साभार - स्मृतिशेष जयप्रकाश जी के स्वजन-मित्रगण

मन बहुत व्यथित हुआ - श्री सुनील जैन राही

यात्रा के

अधबीच में जब यह समाचार मिला कि आज जय प्रकाश जी का देवलोक गमन हो गया, मैं मौन रह गया। आत्मीयता से सराबोर व्यक्ति/घनघनाती आवाज/फोन उठाते ही ऐसा प्रतीत होता दिन सफल हो गया। कई बार उनकी रचनाओं पर अपनी प्रतिकृया देने हेतु मैंने कई बार उन्हें फोन किया। कभी निराशा मुझे हाथ नहीं लगी। जब उनकी रचना "अस्थि विसर्जन का लफड़ा" पढ़ी तो मुझे याद है लगभग सवा घंटे बात हुई। ठहाकों से शुरू और ठाकों पर समाप्त ऐसी बातचीत किसी साहित्यिक मित्र से शायद ही कभी किसी से हुई हो। आलोचना और प्रशंसा के मामले में कबीर थे। 40, 000/- का चेक/डांस इंडिया डांस ने आँखें सजल की थीं और अस्थि विसर्जन पर खाकी पर परिश्रमिक शब्द गूंज उठे।

मन बहुत व्यथित हुआ।

व्यंग्य का उद्दंड विद्यार्थी

श्री सुनील जैन राही नई दिल्ली

28/12/2024

♥♥♥♥♥

प्रिय जय प्रकाश तुम बहुत याद आओगे - श्री जयंत भारद्वाज

साहित्य जगत की अपूरणीय क्षति तो है ही साथ ही हमारा एक जिंदादिल,हंसमुख,मिलनसार दोस्त चिरनिंद्रा में चला गया।

भाई जयप्रकाश के साथ जबलपुर में तुलाराम चौक शाखा में पदस्थी के दौरान अविस्मरणीय यादें हैं।

प्रसिद्ध व्यंग्यकार स्वर्गीय हरिशंकर परसाई जी के व्यंग्य साहित्य पर आधारित मेरे द्वारा बनाए गए व्यंग्य चित्रों की तीन दिवसीय प्रथम प्रदर्शनी दुर्गावती संग्रहालय में उनके ही संयोजन में लगाई गई ।

प्रिय जय प्रकाश तुम बहुत याद आओगे हम तुम्हे कभी भूल नहीं पाएंगे।

विनम्र श्रद्धांजलि 🙏

श्री जयंत भारद्वाज

♥♥♥♥♥

व्यंग्य लेखन में परसाई की परंपरा को आगे बढ़ाया - डॉ ए के तिवारी

चाहे कहीं रहे जय प्रकाश पांडे मगर मुझसे फोन /मोबाइल पर बात कर लेते थे. अब कौन मुझे मोबाइल फ़ोन पर कॉल करेगा--?? व्यक्तिगत विषय हों या पारिवारिक साहित्य हों या बैंक का, श्री सुरेश तिवारी जी हों या डॉ अशोक कुमार शुक्ल सब पर खूब चर्चा करता था J P .अब याद कर रहे बस. मेरे से कई बार कहा कि अपना व्यंग्य संकलन प्रकाशित कराओ . लघुकथा संग्रह भी कब छपेगा.अपनी स्वास्थ्य पर भी अनेक बार बताया तो मैंने कहा था पुणे और मुम्बई जाओ फॅमिली मेंबर्स के साथ. लेकिन विधाता क्या करेगा मालूम ना था । ओम शान्ति शान्ति । 🙏

डॉ ए के तिवारी पोद्दार कॉलोनी सागर

♥♥♥♥♥

अंत समय तक रचनाधर्मिता में लगे रहे - श्री मुकेश गर्ग असीमित

अत्यंत दुखद समाचार। भगवान उनकी आत्मा को अपने श्रीचरणों में स्थान दें। 🙏 अंत समय तक रचनाधर्मिता में लगे रहे हैं ।अट्टहास पत्रिका के दिसंबर अंक के लिए उनके द्वारा आतिथ्य संपादन करना था। मुझ से भी एक रचना माँगी गई तो जो मैंने उन्हें सहर्ष आभार के साथ प्रदान की थी ,कभी मिला तो नहीं उनसे लेकिन चंद महीनों में ही एक मौन सा संवाद और उनके प्रति कृतज्ञता का भाव रहता था 🙏

श्री मुकेश गर्ग असीमित

♥♥♥♥♥

विनम्र श्रद्धांजलि - श्री ओ.पी.सैनी

मेरी पहली मुलाकात श्री पांडेय जी से 6 वर्ष पूर्व व्यंगम की गोष्ठी के अवसर पर हुई थी । पहली ही मुलाकात मैं वे सबसे अलग अनुभूत हुए । नया सदस्य होने के बाद भी उन्होंने मुझे आत्मीय सम्मान दिया । जब-तक उनसे मुलाकात होती रही वे बहुत ही मिलनसार और सहयोग देने मैं तद्पर रहे । किसी कारण वश 2 माह से मेरी पेंशन रुकी हुई थी जब उनको इस बारे मैं पता चला तो उन्होंने भोपाल स्थित पेंशन विभाग मैं बात की जिससे 1-2 दिन मैं ही मेरी पेंशन मुझे मिल गयी । इतने सहयोगी थे पांडेय जी । उनकी आत्मा के श्री चरणों में मेरी विनम्र श्रद्धांजलि ।

श्री ओ.पी.सैनी जबलपुर (म.प्र)

♥♥♥♥♥

संस्मरण (35-40 वर्ष) पूर्व का... - श्री के. पी. पाण्डेय 'वृहद'

श्री जय प्रकाश पाण्डेय जी से मेरी पहली मुलाक़ात मेरे निवास एम -193 शिव नगर के सामने हाउसिंग बोर्ड का एम आई जी 20 ख़रीदा ओर उसे किराए से देना चाहा था दो किरायेदार रखने थे पाण्डेयजी ने किसी बैंक कर्मचारी को बेच दिया था। उन दिनों में लिखता तो था किन्तु अधिकतर कविताएं लिखता था पर मुझे तब नहीं मालूम था कि ये व्यंग विधा के अच्छे लेखक है। व्यक्तिगत मुलाक़ात के अतिरिक्त मैं पाण्डेयजी को इस से पूर्व इसलिए भी जानता था कि मेरे मित्र प्रकाश चंद दुबे जो मेरे सहकर्मी ओर परसाई जी के भांजे है और अक्सर उनके निवास पर मेरा व जय प्रकाशजी का आना होता था।

कालांतर में पाण्डेयजी बैंक की नौकरी में इधर उधर रहे वा मैं भी ट्रांसफर होता रहा। सेवा निवृत्ती के काफ़ी दिनों बाद जय प्रकाश जी से मुलाक़ात एक साहित्यिक समारोह में हुई तब मैं उनके व्यंग्य विधा को गहराई से जान सका था इधर करीब 5-6 वर्षों से व्यंग पढता तो उन्हें बधाई अवश्य देता।

आत्मीयता का दायरा उस समय से ओर अधिक बढ़ा जब से मुझे उनके निवास पर व्यंगम की मासिक गोष्ठी में शरीक होने का मौका मिला श्री पाण्डेयजी के माध्यम से ई -अभिव्यक्ति पत्रिका एवम अट्टहास मे मेरी व्यंग रचना (यदि परसाईजी ना होते तो क्या होता?) प्रकाशित हुई। पाण्डेयजी के इस आत्मीय सहयोग एवम परमार्थ का में ऋणी हूँ उन्हें विनम्र श्रद्धांजलि साथ ही ईश्वर से प्रार्थना है कि परिवारजनों को असमय आए इस असीम कष्ट को सहने की शक्ति प्रदान करें पुनः विनम्र श्रद्धांजलि

श्री के. पी. पाण्डेय 'वृहद' मो. 9424746534

2 जनवरी 1956 - 26 दिसम्बर 2024

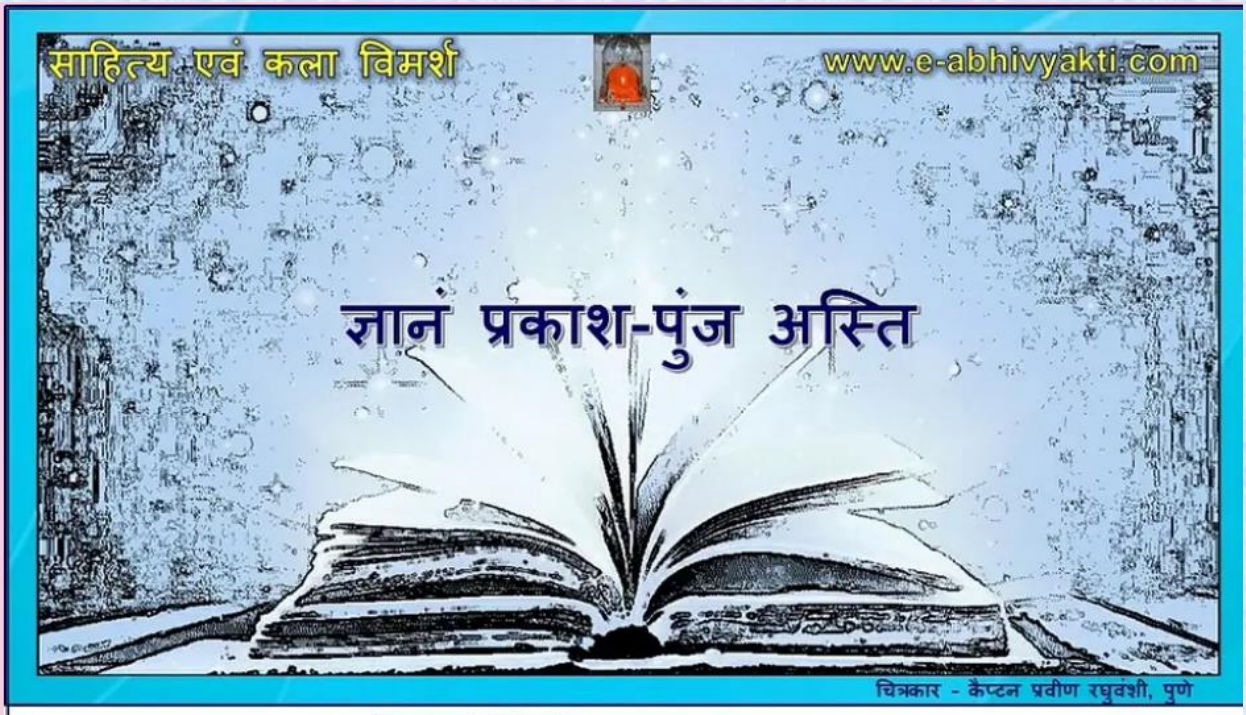

चित्रकार - कैप्टन प्रवीण रघुवंशी, पुणे

सम्पादक मण्डल

हिन्दी - श्री विवेक रंजन श्रीवास्तव, श्री जय प्रकाश पाण्डेय जबलपुर
अङ्ग्रेज़ी - कैप्टन प्रवीण रघुवंशी (नौसेना मैडल), पुणे
मराठी - श्रीमती उज्ज्वला केळकर, श्री सुहास रघुनाथ पंडित, सौ.मंजुषा मुळे, सौ.गौरी गाडेकर
अंतरराष्ट्रीय साहित्य एवं संस्कृति - डॉ राधिका पवार बावनकर, बाम्बेर्ग (जर्मनी)

सम्पादक
श्री हेमन्त बावनकर, पुणे

e-abhivyakti